अध्याय
08

पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधन

परिचय

- विश्व राजनीति में पर्यावरण और संसाधनों के बढ़ते महत्व, पर्यावरण आंदोलन तथा पर्यावरण से जुड़ी हाल की बहशो में भारत का पक्ष जानेंगे।
- इसके अलावा 1992 के पृथ्वी सम्मेलन ने पर्यावरण को विश्व राजनीति के प्रमुख मुद्दों में शामिल करा दिया गया है।

वैश्विक राजनीति में पर्यावरण की चिंता क्यों

- दुनिया भर में कृषि योग्य भूमि में अब कोई बढ़ोतरी नहीं हो रही है जबकि मौजूदा उपजाऊ के बड़े हिस्से पर उर्वरता कम हो रही है।
- संयुक्त राष्ट्र संघ की मानव विकास रिपोर्ट (2016) के अनुसार विकासशील देशों की 66.3 करोड़ जनता को स्वच्छ जल उपलब्ध नहीं होता है।
- 2 अरब 40 लाख आबादी साफ सफाई की सुविधा से वंचित है इस वजह से 30 लाख से ज्यादा बच्चे हर साल मौत के शिकार होते हैं।
- प्राकृति वन एवं जलवायु को संतुलित रखने में मदद करते हैं जिससे जलचक्र भी संतुलित रहता है धरती के ऊपर वायुमंडल में ओजोन गैस की मात्रा में लगातार कमी होती जा रही है, समुद्र तटीय क्षेत्रों का प्रदूषण बढ़ रहा है।
- किसी एक देश की सरकार इनका पूरा समाधान अकेले दम पर नहीं कर सकती, इसी वजह से ये मसले विश्व राजनीति का हिस्सा बन जाते हैं।
- 1992 में संयुक्त राष्ट्र संघ का पर्यावरण और विकास के मुद्दे पर एक सम्मेलन ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में हुआ इसे पृथ्वी सम्मेलन कहा जाता है इसमें 170 देश, हजारों स्वयंसेवी संगठन तथा बहुराष्ट्रीय निगमों ने भाग लिया।
- उत्तरी देशों की मुख्य चिंता ओजोन परत की छेद और वैश्विक ताप वृद्धि (ग्लोबल वार्मिंग) को लेकर थी। रियो सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता और

© JCERT not to be republished

वानिकी के संबंध में एजेंडा-21 के रूप में विकास के कुछ तौर-तरीके भी सुझाए गए।

विश्व की साझी संपदा की सुरक्षा

- विश्व की साझी संपदा, उन संसाधनों को कहते हैं जिन पर किसी एक का नहीं बल्कि पूरे समुदाय का अधिकार होता है।जैसे चारागाह मैदान, कुआँ या नदी ।
- वैश्विक संपदा के अंतर्गत पृथ्वी, वायुमंडल, अंटार्कटिका समुद्र की सतह और बाहरी अंतरिक्ष शामिल है ।
- इस दिशा में महत्वपूर्ण समझौते जैसे अंटार्कटिका संधि (1959) मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल (1987) और अंटार्कटिका पर्यावरणीय न्यायाचार (1991) हो चुके हैं।
- 1980 के दशक के मध्य में अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन में छेद की खोज एक आंख खोलने वाली घटना थी।

साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियां

- दक्षिण के विकासशील देशों का कहना है कि इसमें परिस्थितिकी को ज्यादा नुकसान विकसित देश ने पहुंचाया है, इसलिए उन्हें इस नुकसान की भरपाई की जिम्मेवारी ज्यादा उठानी चाहिए।
- 1992 में हुए पृथ्वी सम्मेलन में इस तर्क को मान लिया गया और इसे साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियां का सिद्धांत कहा गया।
- इस संदर्भ में रियो घोषणापत्र का कहना है कि धरती के परिस्थितिकी तंत्र की अखंडता और गुणवत्ता की बहाली सुरक्षा संरक्षण के लिए विभिन्न देश विश्व बंधुत्व की भावना से आपस में सहयोग करेंगे।
- जलवायु परिवर्तन से संबंधित संयुक्त राष्ट्र संघ के नियमाचार, यानी यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज (UNFCCC-1992) में भी कहा गया है ।
- इस संधि को स्वीकार करने वाले देश अपना क्षमता के अनुरूप पर्यावरण के अपक्षय में अपने हिस्सदारी के आधार पर साझी परंतु अलग-अलग जिम्मेदारियां निभाएंगे ।
- ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में सबसे ज्यादा हिस्सा विकसित देशों का है। विकासशील देशों का प्रति व्यक्ति उत्सर्जन कम हुआ है इस कारण चीन, भारत और विकासशील देशों को क्योटो प्रोटोकॉल की बाध्यताओं से अलग रखा गया है।

साझी संपदा

- साझी संपदा का अर्थ होता है ऐसी संपदा जिस पर किसी समूह के प्रत्येक सदस्य का स्वामित्व हो।
- निजीकरण गहनतर खेती आबादी की वृध्दि और पारिस्थितिकी तंत्र की गिरावट समेत कई कारणों से पूरी दुनिया में साझी संपदा का आकार घट रहा है ।
- भारत के वन प्रदेशों में विद्धमान पावन वन- प्रातरों (देवस्थान) धार्मिक कारणों से

© JCERT not to be republished

प्रकृति की रक्षा करने का चलन है।

- इस प्रथा में वनों के कुछ हिस्सों को काटा नहीं जाता देश भर की भाषाओं में इसके लिए अलग-अलग शब्द है राजस्थानी में वानी-केकड़ी ओरान झारखंड में जहेरा थान और सरना, मेघालय में लिंगदोह, केरल में काव इत्यादि।

पर्यावरण के मसले पर भारत का पक्ष

- भारत ने क्योटो प्रोटोकोल (1997) पर हस्ताक्षर 2002 में किया और इसका अनुमोदन किया कि भारत, चीन और अन्य विकासशील देशों को क्योटो प्रोटोकॉल की बाध्यताओं से छूट दी गई है क्योंकि औद्योगिकरण के दौर में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन के मामले में इनका कुछ खास योगदान नहीं था।
- हाल में संयुक्त राष्ट्र संघ के इस नियमचार के अंतर्गत तेजी से औद्योगिक होते देश जैसे ब्राजील चीन भारत नियमचार की बाध्यताओं को पालन करते हुए ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करें।
- भारत के 2020 तक कार्बन का प्रति व्यक्ति उत्सर्जन बनाने के बावजूद विश्व के 2002 के औसत 3.8 टन प्रति व्यक्ति के आधे से भी कम होगा।
- 2001 में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम पारित हुआ। 2003 के बिजली अधिनियम में नवीकरणीय (Renewale) ऊर्जा के इस्तेमाल को बढ़ावा दिया गया।
- भारत ने 2 अक्टूबर 2016 को पेरिस जलवायु समझौते का अनुमोदन किया।
- भारत ने पृथ्वी सम्मेलन के समझौते के क्रियान्वयन का एक पुनरावलोकन 1997 में किया।
- भारत का यह भी मानना है कि दक्षेस (SAARC) में शामिल देश पर्यावरण की प्रमुख वैश्विक मसलों पर एक समान राय बनाए, ताकि इस क्षेत्र की आवाज वजनी हो सके।

पर्यावरण आंदोलन एक या अनेक

- दक्षिणी देशों मैक्सिको, ब्राजील, मलेशिया, इंडोनेशिया महादेशीय अफ्रीका और भारत के वन आंदोलनों पर बहुत दबाव है, तीसरी दुनिया के विभिन्न देशों में वनों की कटाई खतरनाक गति से जारी है।
- एक अच्छा उदाहरण फिलीपिन्स है जहां कई समूहों और संगठनों ने एक साथ मिलकर एक ऑस्ट्रेलियाई बहुराष्ट्रीय कंपनी वेस्टर्न माइनिंग कारपोरेशन के खिलाफ अभियान चलाया।
- कुछ आंदोलन बड़े बांधों के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं, अब बांध विरोधी आंदोलन को नदियों को बचाने के आंदोलन के रूप में देखने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है।
- 1980 के दशक के शुरुआती और मध्यवर्ती बर्षों में विश्व का पहला बांध विरोधी आंदोलन दक्षिणी गोलार्ध्द में चला।
- ऑस्ट्रेलिया में चला यह आंदोलन फैंकलीन नदी तथा इसके परिवर्ती वन को बचाने का आंदोलन था। भारत में भी बांध विरोधी आंदोलन आंदोलन में नर्मदा आंदोलन सबसे ज्यादा प्रसिद्ध है।

© JCERT not to be republished

संसाधनों की भू-राजनीति

- संसाधनों को लेकर राज्यों के बीच तनातनी हुई है इसके मूल में था विदेश में संसाधनों की मौजूदगी तथा समुद्री नौवहन में दक्षता।
- दूसरे विश्व युद्ध के दौरान सामूहिक संसाधनों की निर्बाध आपूर्ति का महत्व बहुत अच्छी तरह उजागर हो गया।
- शीतयुद्ध की समाप्ति और सोवियत संघ के विघटन के बाद सरकारों की मौजूदा चिंता सुरक्षित आपूर्ति को बनाए रखने की है।
- बीसवीं सदी के अधिकांश समय में विश्व राजनीति की अर्थव्यवस्था तेल पर निर्भर रही। पेट्रोलियम काइतिहास युद्ध और संघर्षों का इतिहास रहा हैं।
- विश्व के कुल तेल उत्पादन का 30% पश्चिम एशिया खासकर खाड़ी क्षेत्र है। इस क्षेत्र में विश्व में ज्ञात तेल भंडार का 64% हिस्सा मौजूद है ।
- सऊदी अरब के पास विश्व के कुल भंडार का एक तिहाई हिस्सा मौजूद है, इराक विश्व में तेल भंडार के मामले में दूसरे स्थान पर है ।
- विश्व राजनीति के लिए पानी एक महत्वपूर्ण संसाधन है। यह 21वीं सदी में फसाद की जड़ साबित हुई। 1950 और 60 के दशक में इजराइल, सीरिया के बीच संघर्ष हुआ।
- फिलहाल तुर्की, सीरिया और इराक के बीच फरात नदी पर बांध के निर्माण को लेकर एक दूसरे से ठनी हुई है।

मूलवासी

- मूलवासी की परिभाषा संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1982 में दी थी। इन्हें ऐसे लोगों का वंशज बताया गया जो किसी मौजूदा देश में बहुत दिनों से रहते चले आ रहे थे ।
- भारत सहित विश्व के विभिन्न हिस्सों में मौजूद लगभग 30 करोड़ मूलवासी है फिलीपिन्स के कोरडिलेरा क्षेत्र में 20लाख मूलवासी लोग रहते हैं।
- बांग्लादेश के चटगांव पर्वतीय क्षेत्र में 6 लाख आदिवासी बसे हैं। उत्तरी अमेरिकी मूलवासियों की संख्या 3 लाख 50 हजार है।
- मूलवासियों का निवास स्थान वाले स्थान मध्य और दक्षिणी अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा भारत में है ।

स्मरणीय तथ्य

- ब्राजील के रियो डी जनेरियो में 1992 में संयुक्त राष्ट्र संघ का पर्यावरण और विकास के मुद्दे पर एक सम्मेलन हुआ।
- क्योटो प्रोटोकॉल वायुमंडल के प्रदूषण से संबंधित है।
- पहला बांध विरोधी आंदोलन आस्ट्रेलिया में फ्रैंकलीन नदी तथा इसके परिवर्ती वन को बचाने का आंदोलन था।
- सऊदी अरब विश्व में सबसे बड़ा तेल उत्पादक देश है और विश्व में दूसरे स्थान पर इराक है।
- भारत सहित विश्व के विभिन्न हिस्सों में मौजूद लगभग 30 करोड़ मूलवासी है।

© JCERT not to be republished

- पर्यावरण संबंधी 'लिटमस टू ग्रोथ' पुस्तक क्लब ऑफ रोम ने 1972 में लिखी।

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. क्योटो प्रोटोकॉल का संबंध किससे हैं-

a. ऑक्सीजन की वृद्धि

b. कार्बन डाइऑक्साइड की निकासी

c. ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन

d. वायुमंडल का प्रदूषण

प्रश्न 2. विश्व में सबसे अधिक तेल भंडार कहां है-

a. सऊदी अरब b. कुवैत

c. ईरान d. इराक

प्रश्न 3. ऊर्जा संरक्षण अधिनियम कब पारित हुआ-

a. 2000. b. 2001

c. 2002. d. 2006

प्रश्न 4. भारत द्वारा क्योटो प्रोटोकोल पर कब हस्ताक्षर और अनुमोदन किया गया-

a. 2000 b. 2001

c. 2002 d. 2003

प्रश्न 5. क्योटो प्रोटोकॉल की बाध्यताओं से किस देश को अलग नहीं किया जा सकता है-

a. चीन

b. भारत

c. विकासशील देश

d. रुस

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 6. वैश्विक राजनीति में पर्यावरण की चिंता के क्या कारण हैं?

प्रश्न 7. साझी संपदा से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 8. पर्यावरण के मसले पर भारत का क्या पक्ष है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 9. पर्यावरण आंदोलन पर प्रकाश डालें।

प्रश्न 10. मूलवासी और उनके अधिकार का वर्णन करें।

© JCERT not to be republished